कला और संस्कृति

डॉ० अनिता रानी
एसोसिऐट प्रोफेसर, संगीत विभाग
बी० डी० जैन गर्ल्स पी० जी० कॉलेज, आगरा
ईमेलः dr.anita80@gmail.com

Reference to this paper should be made as follows:

डॉ० अनिता रानी

कला और संस्कृति

Artistic Narration 2021, Vol. XII, No. 2, Article No. 26 pp. 163-171

https://anubooks.com/artistic-narration-no-xii-no-2-july-dec.-2021/

सारांश

संस्कृति मंत्रालय कला और संस्कृति के संरक्षण तथा विकास में अहम भूमिका निभाता है। इस विभाग का उद्देश्य ऐसी पद्धति विकसित करना है जिससे कला और संस्कृति से जुडे। बुनियादी, सांस्कृतिक और सौंदर्यपरक मुल्यों तथा अवधारणाओं को जनमानस में जीवंत रखा जा सके। यह समकालीन सृजनात्मकता कार्यकलापों की विभिन्न विधाओं को प्रोत्साहित करने से जुडे कार्यक्रम भी चलाता है। यह विभाग ऐतिहासिक घटनाओं की जयंती और महान कलाकारों की शताब्दियां मनाने वाली प्रमुख एजेंसी भी है।

कला शब्द संस्कृत भाषा का है। भाषा शब्द की उत्पत्ति संदिग्ध है। संस्कृत पंडितों ने इसकी उत्पत्ति कई तरह से की है। कुछ लोग कला को 'कल' शब्द से सम्बन्धित करते हैं, जिसका अर्थ होता है सुन्दर, कोमल, मधुर, सुखदायी। कुछ विद्वान कला को 'कड' धातु से बना मानते है। जिसका अर्थ होता है प्रसन्न करना, मस्त करना इत्यादि। इसी प्रकार कुछ विद्वान इसे 'कं' से सम्बन्धित कर आनन्द के अर्थ में लेते हैं। संस्कृत भाषा में 'कला' शब्द का प्रयोग अनेकों रूपों में हुआ है, किन्तु इसका सबसे अधिक प्रचलित अर्थ है– किसी भी कार्य को पूर्ण कुशलता से करना।

'कला' शब्द का कदाचित सर्वप्रथम और प्रमाणिक प्रयोग भरतमुनि के 'नाट्यशास्त्र' में मिलता है।

''न तद् ज्ञानं न तच्छिल्पं न सा विद्या न सा कला।
न सा योगो न तत्कर्म नाट्येऽस्मिन् यन्न दृश्यते।। ''

अर्थात् सभी ज्ञान, शिल्प, विद्या और कला का नाट्य में समावेश हो ही जाता है। इन सबका समन्वित रूप ही नाट्य है, अतः कलाओं के लिए नाट्य से भिन्न रस–शास्त्र की आवश्यकता नहीं हुई।

डॉ० अनिता रानी

'भरतमुनि' का ज्ञान, शिल्प, और विद्यायें अलग कला हैं। कला से यहॉ ठीक क्या आशय है कहना कठिन है, उसकी व्याख्या करते हुये 'अभिनव गुप्त' ने 'कलाभित्ती' में लिखा है, सम्भवतः इसी आधार पर 'बलदेव उपाध्याय' ने श्लोक के सन्दर्भ में कला को गीत, वाद्य, नृत्य आदि का वाचक माना है। यदि इसे ठीक मानें तो 'कला' संगीत की समानार्थी हो जाती है पर शायद 'भरत' का संगीत से आशय सही अनुमान नहीं लगाया जाता है कि 'भरत' द्वारा प्रयुक्त कला भाषा विज्ञान व मात्राओं की दृष्टि के निकट है और शब्द यहॉ ललित कला उपयोगी कला के निकट है।

अतः निष्कर्ष रूप में यही कर सकते हैं कि ललित कलाओं में संगीत कला सर्वोपरि है क्योंकि वह गतिशील है, आनन्दानुभूति कराने और भावाभिव्यक्ति में सक्षम है। चर और अचर पर प्रभाव डालने में समर्थ है, लोकरंजक है और मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करने वाली है। लय की दृष्टि से संगीत कला अन्य ललित कलाओं में अग्रणी हो जाती है। संगीत वह ललित कला है जिसमें स्वर और लय के द्वारा हम अपने भावों को प्रकट करते हैं। संगीत एक ललित कला है, जो मानसिक जीवन में सौन्दर्य का प्रत्यक्षीकरण कराती है। (श्यामसुन्दर दास) इस कला का मूर्त आधार जितना कम है वह उतनी ही उत्कृष्ट कला है। इस दृष्टि से वस्तु, मूर्ति, चित्र, काव्य तथा संगीत इन सब ललित कलाओं में संगीत की ही श्रेष्ठता प्रतिपादित की जाती है।

मुख्य शब्द

संगीत, कला, संस्कृति, जीवन मूल्य।

संस्कृति मंत्रालय कला और संस्कृति के संरक्षण तथा विकास में अहम भूमिका निभाता है। इस विभाग का उद्देश्य ऐसी पद्धति विकसित करना है जिससे कला और संस्कृति से जुडे। बुनियादी, सांस्कृतिक और सौंदर्यपरक मुल्यों तथा अवधारणाओं को जनमानस में जीवंत रखा जा सके। यह समकालीन सृजनात्मकता कार्यकलापों की विभिन्न विधाओं को प्रोत्साहित करने से जुडे कार्यक्रम भी चलाता है। यह विभाग ऐतिहासिक घटनाओं की जयंती और महान कलाकारों की शताब्दियां मनाने वाली प्रमुख एजेंसी भी है।

भारतीय कला के प्रति देश–विदेश में समझ बढाने और प्रचार–प्रसार के लिए सरकार ने नई दिल्ली में 1954 में ललित कला अकादमी की स्थापना की। अकादमी के दिल्ली, लखनऊ, चेनई, कलकाता और भुवनेश्वर में अपने क्षेत्रीय केंद्र हैं। जिन्हें राष्ट्रीय कला केंद्र के नाम से जाना जाता है। इन केंद्रो पर पेंटिंग, मूर्तिकला, प्रिटं–निर्माण और चिकनी मिट्टी की कलाओं के विकास के लिए कार्यशाला और सुविधाएं उपलब्ध है।

अकादमी अपनी स्थापना से ही हर वर्ष समसामयिक भारतीय कलाओं की प्रदर्शनियां आयोजित करती रही है। 50–50 हजार रूपये के 15 पुरस्कार राष्ट्रीय भी दिये जाते हैं। प्रत्येक तीन वर्ष पर अकादमी समकालीन कला पर नई दिल्ली में त्रिमासिक अंत राष्ट्रीय प्रदर्शनी आयोजित करती है।

अकादमी हर वर्ष जाने–माने कलाकारों और कला क्षेत्र के इतिहासकारों को अपना फेलो चुनकर सम्मानित करती है। विदेशों में भारतीय कला के प्रचार–प्रसार के लिए अकादमी अंतर्राष्ट्रीय द्विवार्षिकियों और त्रिवार्षिकियों में नियमित रूप से भाग लेती है और अन्य देशों की

कलाकृतियों की प्रर्दशनिया भी आयोजित करती हैं। देश के कलाकारों का अन्य देशों के कलाकारों के साथ मेलमिलाप ओर तालमेल बढाने के उद्देश्य से अकादमी भारत सरकार के सांस्कृतिक आदान–प्रदान कार्यक्रमों और समझौतों के अंतर्गत कलाकारों के एक दुसरे के यहां भेजने की व्यवस्था करती है।

ललित कला अकादमी कला संस्थाओं/संगठनों को मान्यता प्रदान करती है और इन संस्थाओं के साथ–साथ राज्य की अकादमियों को भी आर्थिक सहायता देती है। यह क्षेत्रीय केंद्रों के प्रतिभावान युवा कलाकारों को छात्रवष्त्ती प्रदान करती है। अपने प्रकाशन कार्यक्रम के तहत अकादमी समकालीन भारतीय कलाकारों की रचनाओं को हिन्दी और अग्रेंजी में मोनोग्राफ और समकलीन पारम्परिक और जनजातीय और लोक कलाओं पर जानेमाने लेखकों और कला आलोचकों द्वारा लिखित पुस्तकें प्रकाशित करती है। अकादमी अंग्रेजी में ''ललित कला कंटेपेरेरि'',''ललित कला ऐंशिऐंट'' तथा हिन्दी में ''समकालीन कला'' नामक अर्द्धवार्षिक कला पत्रिकाऐं प्रकाशित करती है। भारत में शास्त्रीय संगीत की दो प्रमुख विधाएं–हिन्दुस्तानी और कर्नाटक–गुरू–शिष्य परमपरा का निर्वाह करती चली आ रही हैं। इसी परंपरा ने घरानों और संप्रदायों कह स्थापना की प्रेरणा दी जो बराबर आगे बढ रही है।

भारत में नृत्य परम्परा 2000 वर्षों से भी ज्यादा वर्षों से निरंतर चली आ रही है। नृत्य की विषय–वस्तु धर्म–ग्रन्थों, लोक कथाओं और प्राचीन साहित्य पर आधारित रहती है। इसकी दो प्रमुख शैलिया हैं–शास्त्रीय नृत्य और लोक नृत्य। शास्त्रीय नृत्य वास्तव में प्राचीन साहित्य पर आधारित रहती है।

कला शब्द संस्कृत भाषा का है। भाषा शब्द की उत्पत्ति संदिग्ध है। संस्कृत पंडितों ने इसकी उत्पत्ति कई तरह से की है। कुछ लोग कला को 'कल' शब्द से सम्बन्धित करते हैं, जिसका अर्थ होता है सुन्दर, कोमल, मधुर, सुखदायी। कुछ विद्वान कला को 'कड' धातु से बना मानते है। जिसका अर्थ होता है प्रसन्न करना, मस्त करना इत्यादि। इसी प्रकार कुछ विद्वान इसे 'कं' से सम्बन्धित कर आनन्द के अर्थ में लेते हैं। संस्कृत भाषा में 'कला' शब्द का प्रयोग अनेकों रूपों में हुआ है, किन्तु इसका सबसे अधिक प्रचलित अर्थ है– किसी भी कार्य को पूर्ण कुशलता से करना।

'कला' शब्द का कदाचित सर्वप्रथम और प्रमाणिक प्रयोग भरतमुनि के 'नाट्यशास्त्र' में मिलता है।

''न तद् ज्ञानं न तच्छिल्पं न सा विद्या न सा कला।
न सा योगो न तत्कर्म नाट्येऽस्मिन् यन्न दृश्यते।। ''

अर्थात् सभी ज्ञान, शिल्प, विद्या और कला का नाट्य में समावेश हो ही जाता है। इन सबका समन्वित रूप ही नाट्य है, अतः कलाओं के लिए नाट्य से भिन्न रस–शास्त्र की आवश्यकता नहीं हुई।

'भरतमुनि' का ज्ञान, शिल्प, और विद्यायें अलग कला हैं। कला से यहॉ ठीक क्या आशय है कहना कठिन है, उसकी व्याख्या करते हुये 'अभिनव गुप्त' ने 'कलाभित्ती' में लिखा है, सम्भवतः इसी आधार पर 'बलदेव उपाध्याय' ने श्लोक के सन्दर्भ में कला को गीत, वाद्य, नृत्य आदि का वाचक माना है। यदि इसे ठीक मानें तो 'कला' संगीत की समानार्थी हो जाती है पर शायद 'भरत' का संगीत से आशय सही अनुमान नहीं लगाया जाता है कि 'भरत' द्वारा प्रयुक्त कला भाषा विज्ञान व मात्राओं की दृष्टि के निकट है और शब्द यहॉ ललित कला उपयोगी कला के निकट है।

बहुत से प्रमाणों से यह स्पष्ट हो जाता है कि हमारे यहॉ शिल्प शब्द का प्रयोग 'काव्य' के अतिरिक्त अन्य सभी कलाओं (उपयोगी व ललित कला) के लिए आ रहा था पर 'भरत' के कुछ पूर्व कदाचित बौध युग में 'कला' का भी इसी अर्थ में प्रयोग होने लगा।

'किसी भी कार्य को चतुराई पूर्वक कुशलता के साथ, सुन्दर रूप में किया जाय, उसे बोलचाल की भाषा में कला कहा जाता है।'

प्राचीन काल में भारत में 64 कलाएँ मानी जाती थी, जो चारू तथा कारू नामक भेद में विभक्त थी। कारू का संबन्ध उपयोगिता से था और चारू का केवल सुन्दरता से। 64 कलाओं में ऐसी बहुत सी कलाएँ हैं जो सरलता पूर्वक शिल्प कहीं जा सकती हैं। 'कला' की संख्याओं के संबन्ध में सबसे प्रसिद्ध 64 है। 'कला' शब्द सचमुच बडा व्यापक अर्थ रखता है।

वस्तुतः 'कला' शब्द बहुत हद तक पर्यायवाची है– मानव के हर कार्य का। मानव की जितनी भी क्रियायें हैं सभी कला हैं या कहिये कला के अन्तर्गत आती हैं।

'मनुष्य जिन चीजों का निर्माण या रचना करता है वही कला कहलाती है' इस प्रकार मानवीय चेष्टा या क्रिया का ही एक प्रत्यक्ष रूप कला है।'

एक अन्य स्थान पर कहा गया है–

'जो भी कार्य मनुष्य कौशल के साथ सफलतापूर्वक कर लेता है उसे कला कहते हैं।'

'शुक्राचार्य' के 'शुक्रनीतिसार' तथा 'कामसूत्र' आदि में 64 कलाओं के नाम दिये गये हैं। ये सूची सर्वत्र एक सी नही है, पर दृष्टिकोण प्रायः सभी में एक ही है।

'कामसूत्र' की सूची निम्नवत हैः–

1. गीत– गाना
2. वाद्य– बजाना
3. नृत्य –नाचना
4. नाट्य– अभिनय, नाटक करना
5. आलेख– चित्र बनाना
6. विशेषकच्छेद्य– तिलक देने के लिए सॉचे बनाना

7. तंडुल कुसुमावलि विकार – चावल, फूल आदि से चौक पूरना
8. पुष्पा–स्तरण
9. दशन–वसनांगराग–दॉत, वस्त्र, शरीर आदि को कलापूर्ण ढंग से सजाना
10. मणि– भूमिका कर्म
11. शयन–रचना– बिस्तर लगाना
12. उदक– वाद्य–जलतरंग बजाना
13. उदक घात–जलक्रीडा या पिचकारी चलाना
14. चित्रयोग– अवस्था परिवर्तन करना, वृद्ध को युवा बनाना
15. माल्य–ग्रंथ–विकल्प– मालागूथना
16. केश शेखरापीड–योजना– बालों में फूल गूथना या मुकुट सजाना
17. नेपथ्य योग– देश–काल के अनुसार कपडे या गहने धारण करना
18. कर्ण पत्र भंग– फूल, पत्ते से कर्ण फूल बनाना
19. गंध युक्ति– सुगंधित पदार्थ बनाना
20. भूषण– भोजन– आभूषण पहनना
21. इन्द्रजाल
22. कीचुमार योग– कुरूप को सुन्दर बनाना
23. हस्तलाघव– हाथ की फुर्ति
24. चित्र शब्दापूयभक्ष्य– विकार क्रिया (सूपकर्म)
25. पानक–रस–रागासव–योजना– पेय बनाना
26. सूची कर्म–सीना
27. सूत्र कर्म– बेल–बूटे बनाना या रफू करना
28. पहेलिका–पहेली पूछना
29. प्रतिमाला– अंत्याक्षरी की योग्यता रखना
30. दुषचियोग– कठिन पदों या शब्दों का अर्थ निकालना
31. पुस्तक वाचन–ठीक ढंग से पुस्तक पढना
32. नाटिका ख्यायिका दर्शन– नाटक देखना
33. काव्य समस्या पूर्ति
34. पट्टिका–वेत्र–वाण विकल्प–नेवाड या बेंत से चारपाई बिनना
35. तुर्क–कर्म–चर्खी या तकली से सूत कातना
36. तक्षण– बढई या संगत राश का काम

37. वास्तुविद्या
38. रौप्य–रत्न परीक्षा–धातु तथा रत्न पहचानना
39. धातुवाद–कच्ची धातु को स्वच्छ करना या मिली धातु को अलग करना
40 .मणिराग–ज्ञान– रत्नों के रंग जानना
41. आकर ज्ञान–खानों की विद्या
42. वृक्षायुर्वेद योग– उपवन लगाने की कला
43. मेव–कुक्कुट– लापक युद्ध विधि इन्हें लडाने की कला
44. शुक–सारिका प्रलापन– तोते मैनें को पढाना
45. उत्सादन– मालिश करना या हाथ–पैर दबाना
46. केशमार्जन कौशल–बालों को साफ रखना
47. अक्षर–मुष्टिका– कथन करपलाई
48. म्लेच्छित– कला–विकल्प–विदेशी भाषा समझना
49. देशभाषा ज्ञान– देशी बोलियों को समझना
50. पुष्प शकटिका– निमित्त ज्ञान प्राकृतिक लक्षणों के आधार पर भविष्यवाणी करना
51. यंत्र मातृका– यंत्र निर्माण
52. धारण मातृका– स्मरण शक्ति बढाना
53. सम्पादय– दूसरों को कुछ पढते देख दुहरा देना
54. मासी काव्य क्रिया–आशुकपि होना
55. क्रिया विकल्प– किसी वस्तु की क्रिया के प्रभाव को पलटना
56. छलिक योग– ऐयारी करना
57. अभिधान कोश–छन्दों ज्ञान– शब्द और छन्दों का ज्ञान
58. वस्त्र गोणन– फटे व वस्त्रों को इस प्रकार पहनना कि फटा अंश न दिखाई दे।
59. धूत
60. आकर्षण क्रीडा–खींचने, फेंकने के सारे खेल
61. बाल क्रीडा कर्म– लडका खिलाना
62. वैनायिकी विद्या–ज्ञान– विनय तथा शिष्टाचार
63. वैजायिकी विद्या–ज्ञान– दुसरों पर विजय पाना
64. व्यायामिकी विद्या–ज्ञान–व्यायाम कला

इसी प्रकार कुछ जैन ग्रंथों में 64 या कहीं–कहीं 72 कलाओं के नाम दिये गये हैं। हमारे यहॉ कला में सामान्यतः उपयोगी व ललित कला दोनों कलाऍ आती रही हैं पर ललित कला को

लेकर थोडा विवाद है। ललित कला में वास्तुकला, मूर्तिकला, चित्रकला, संगीतकला और काव्यकला ये पॉच कलाएँ आती हैं। इनमें से ललित कला में चित्रकला, संगीतकला और काव्यकला विशेष महत्व रखती हैं। संगीत कला के विषय में शॉपेन हॉवर का कहना है कि ''केवल संगीत ही ऐसी कला है जो श्रोताओं से सीधा सम्बन्ध रखती है इसे किसी भी माध्यम की आवश्यकता नहीं होती।'' शॉपेन हॉवर ने इन सबमें संगीत कला को सर्वश्रेष्ठ बताया है क्योंकि

''संगीत कलाः– मनुष्य के हृदय में सोए हुए भावों को जगाने में संगीत जितना सक्षम है उतनी और कोई विद्या नहीं। संगीत कला में एक विशेष गुण और भी है कि वह मनुष्य के अतिरिक्त पशु–पक्षियों को भी आकर्षित करती है। **अन्य में यह सार्मथ्य नहीं।''**

आचार्य शुक्ल तथा प्रसाद जी के अनुसार भारतीय दृष्टि से विद्या और उपविद्या ज्ञान के दो अलग–अलग क्षेत्र हैं इनमें काव्य का स्थान विद्या में माना जाता था जबकि 64 कलाएँ उपविद्या कहलाती थीं।

भृतहरि का प्रसिद्ध श्लोकांश

''साहित्य शब्द कलाविहीनः'' से साहित्य से कला का अलग उल्लेख इसी बात की ओर संकेत करता है।

भारत में कुछ लोगों का यही दृष्टिकोण था पर साथ ही यह मानने के लिए आधार है कि भारतीय दृष्टि से भी काव्य कलाओं के अन्तर्गत है और कुछ लोग कदाचित इसे मानते भी हैं। काव्य की आत्मा रस है। 7वीं सदी में लिखे गये ग्रंथ 'विष्णुधर्मोत्तर' में काव्य तथा संगीत, चित्र आदि का एक ही दृष्टिकोण से वर्णन हुआ है इसमें काव्य की ही भॉति संगीत के स्वरों और चित्र के रंगो से रसो का सम्बन्ध स्थापित किया गया है साथ ही शास्त्रीय संगीतज्ञों में ये बात प्रचलित है जो ठीक भी है कि संगीत से रसों की निष्पत्ति हो सकती है। यह आवश्यक है कि संगीत से काव्य जितनी सफल अभिव्यक्ति नहीं हो सकती। अतएव भारतीय दृष्टि से इन तीनों (चित्र, संगीत, काव्य) की आत्मा एक है फिर दो को कला और एक को कला न मानने का प्रश्न ही नहीं उठता। अंग्रेजी में कला शब्द का प्रयोग 13वीं शताब्दी से आरम्भ होता हैं। प्रारम्भ में इस शब्द का प्रयोग 'कौशल' का केवल प्रयार्यवाची था। लगभग 400 वर्ष बाद 17वीं सदी में कला शब्द का प्रयोग वस्तु, मूर्ति, काव्य, संगीत, नृत्य तथा भाषण आदि के लिए भी प्रयोग होने लगा।

कला की परिभाषा विभिन्न विद्वानों ने अपने–अपने ढंग से दी है

प्लेटो– ''कला सत्य की अनुकृति है।''

अरस्तु– ''उसे अनुकरण कहते हैं।''

क्रोचे– ''अभिव्यक्ति ही कला है।''

हीगल– ''कला आदि भौतिक सत्ता को व्यक्त करने का माध्यम है।''

टालस्टाय– ''कला समभाव के प्रचार द्वारा विश्व को एक करने का साधन है।''

टैगोर– ''कला में मनुष्य अपने मनो भवों की अभिव्यक्ति करता है।''

आचार्य शुक्ल–''एक अनुभूति को दूसरे तक पहुँचाना ही कला है।''

फ्रायड– ''कला दमित वासानाओं का उभरा हुआ रूप है।''

रस्किन– ''प्रत्येक महान कला ईश्वरीय कृति के प्रति मानव के आहलाद् की अभिव्यक्ति है।''

गोथे– '' किसी कला की सबसे बडी समस्या यह रहती है कि वह किस प्रकार महान् सत्य के प्रति कृति प्रस्तुत करें।

इन परिभाषाओं में प्रायः सभी ललित कला की ओर उन्नमुख हुए हैं कला की ओर नहीं। प्रसाद जी तथा कुछ अन्य लोगों ने संकेत किये है कि अपने यहॉ विद्या और उपविद्या का अलग–अलग क्षेत्र था। विद्या हृदय के और उपविद्या विज्ञान के समीप थी किन्तु इनमें हृदय पक्ष प्रबल न होकर बुद्धि पक्ष प्रबल होता है दूसरे शब्दों में इसमें कौशल का प्राधान्य रहता हैं। कला का यह भी एक प्रकार का वर्गीकरण ही हुआ।

वर्गीकरण का महत्व अपनी जगह है। इस प्रकार विद्या हैं तो दोनों (काव्य और अन्य कलाएं) और उपविद्या है तो वो भी दो। इस प्रसंग में एक बात और ज्ञातव्य है कि विज्ञान और कला एक दूसरे के पूरक हैं। हर कला के लिए एक विज्ञान की और विज्ञान को कार्य रूप में परिणीत करने के लिए कला की आवश्यकता होती है। जिस प्रकार संगीत कला में अनेक वर्गीकरण पाये जाते हैं उसी प्रकार कला में भी 'अरस्तु' के बाद समय–समय पर अनेकानेक बर्गीकरण सामने आये।

कुछ लोगों के मतानुसार शिक्षा की दृष्टि से उस समय दो प्रकार की कलाएँ थीं। एक तो **व्यवसायिक कला** जैसेः– रंगाई, बढई, सुनारगिरी, नाई का काम इत्यादि।

दूसरी **उदार कला** जैसे व्याकरण, तर्कभाषा, रेखागणित, संगीत आदि।

कला में समय–समय पर अनेक वर्गीकरण होते रहे हैं।

क्रोचे ने कहा हैः– पुस्तकालय में अपनी सुविधा के लिए पुस्तकों को वर्गीकृत किया जा सकता है उसकी उपयोगिता है पर उस रूप में कोई समझे कि विज्ञान को वगीकृत कर दिया गया तो वह गलती पर है यही कला के बारे में भी सत्य है।

अतः निष्कर्ष रूप में यही कर सकते हैं कि ललित कलाओं में संगीत कला सर्वोपरि है क्योंकि वह गतिशील है, आनन्दानुभूति कराने और भावाभिव्यक्ति में सक्षम है। चर और अचर पर प्रभाव डालने में समर्थ है, लोकरंजक है और मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करने वाली है। लय की दृष्टि से संगीत कला अन्य ललित कलाओं में अग्रणी हो जाती है। संगीत वह ललित कला है जिसमें स्वर और लय के द्वारा हम अपने भावों को प्रकट करते हैं। संगीत एक ललित कला है, जो मानसिक जीवन में सौन्दर्य का प्रत्यक्षीकरण कराती है। (श्यामसुन्दर दास) इस

कला का मूर्त आधार जितना कम है वह उतनी ही उत्कृष्ट कला है। इस दृष्टि से वस्तु, मूर्ति, चित्र, काव्य तथा संगीत इन सब ललित कलाओं में संगीत की ही श्रेष्ठता प्रतिपादित की जाती है।

संदर्भ ग्रंथ

1. भरतीय संगीत का इतिहास – उमेश जोशी
2. कला एवं साहित्य – प्रवृत्ति और परम्परा– प्रो0 विश्वनाथ प्रसाद
3. काव्य और कला– सिद्वान्त और अध्ययन– बाबू गुलाबराय लक्ष्मीनारण गर्ग
4. कला अंक (सम्मेलन पत्रिका)– पं0 भोलानाथ तिवारी
5. कला दर्शन– डॉ हरद्वारी लाल शर्मा
6. स्वतंत्र कला शास्त्र– कान्तिचन्द्र पाण्डेय
7. क्ला के मूल तत्व– चिरंजीलाल
8. भारतीय कला परिचय –कुसुमदास
9. संगीत मासिक पत्रिका
10. संगीत कला विहार